DSSSB PRT, TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR WITH ANKIT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
प्रमुख कवि और उनकी पंक्तियाँ
LIVE
24-07-2024 09:00 AM

अमीर खुसरो

- " क्या जानू वह कैसा है, जैसा देखा वैसा है। "
- "एक थाल मोती से भरा, सबके सिर वह औंधा धरा।
  चारों ओर वह थाली फिरै, मोती उससे एक न गिरै ।। "
- "एक नारि न अचरज किया, साँप मार पिंजरे में दीया।
  ज्यों-ज्यों साँप ताल को खावै, सूखै ताल साँप मर जाए।"
- " एक नार दो को ले बैठी, टेढ़ी होके बिल में पैठी।
  जिसके बैठे उसे सुहाय, खुसरो उसके बल-बल जाए। "

- "अरथ तो इसका बूझेगा। मुँह देखो तो सूझेगा ।।"
- "गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डारै केस"
- " जे हाल मिसकी मकुन तगफुल दुराय नैना, बनाय बतियाँ।'
- " मेरा जोबना नवेलरा भयो है गुलाल "

विद्यापति

- "पुरुष कहाणी हैं। जसु पत्थावै पुन्न।"
- देसिल बअना सब जन मिट्ठा, ते तैसन जपओ अवहट्ठा।
  कनक कदलि पर सिंह समारल ता पर मेरू समाने।
- हिन्दू बोले दूरहि निकार। छोटे तरूका भभकी मार।।

(कीर्तिलता से)

❖ सरस बसन्त समय भल पावलि, दधिन पवन बह धीरे।
सपनहु रूप वचन इक भाषिय। मुख से दूरि करू चीरे ।।

❖ कालि कहल पिय साँझहि रे, जाइबि मइ मरू देस।
मोए अभागिलि नहिं जानल रे, संग जइतवँ जोगिनी बेस ।।

सरहपा

- नाद न बिन्दु न रवि शशि मण्डल चिअराअ सहाबे मूकल ।
- जिहि मन पावन न संचरइ, रवि ससि नाह पवेस ।
- तहि वट चित विसाम करू, सरहे कहिय उवेस ॥
- पंडिअ सअल सत्त बक्खाणइ, देहटि बुद्ध वसन्त न जाणइ ।
  अमणागमण तेन विखंडिअ तोवि णिलज्जइ भाइ हउँ पंडिअ ॥
- परम महासुह एषु कर्णे दुरिअ अशेष हरे ।

कण्हपा

❖ एक्क ण किज्जइ मन्त्र ण तन्त।

❖ हालो डोंबी ! तो पुछमि सदभावे ।
सदगुरु पाअ पए जाइब पुणु जिणउरा ॥

❖ नगर बाहिरे डोंबी तोहरि कुंडिया छइ ।
छोइ जाइ सो बाह्य नाड़िया ।

❖ "जिमि लोग बिलिज्जइ पाणि एहि तिमि धरणी लइ चित्त "

चन्दबरदाई

❖ पुस्तक जल्हण हत्थ दै, चलि गज्जन नृप काज।

❖ मनहूँ कला ससभान कला सोलह सो बन्निय।
बाल बैस ससि ता समीप अमृत रस पिन्निय॥

❖ बज्जिय घोर निसान रान चौहान चहौं दिस।

❖ उट्टि राज प्रिथिराज बाग मनो लग्ग वीर नट

गोरखनाथ के छन्द

❖ "नौ लख पातरि आगे नाचै, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसे मन लौ जोगी खेलै, तब अन्तरि बसै भण्डारा॥"

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण पंक्तियाँ

- "काआ तरुवर पंच विडाल " - लूइपा
- "भाव न होइ, अभाव ण जाइ " - लूइपा
- " सहजे थर करि वारूणी साध" - विरूपा
- " भल्ला हुआ जु मारिया बहिणि म्हारा कन्तु । ”
  लज्जेजं तु वयंसिअहु, जइ भग्गा घर अन्तु ।। - हेमचन्द्र
- "पिय संगामि कउ निद्दड़ी" - हेमचन्द्र
- "गंगा जउँना माझे बहइ रे नाई" - डोम्भिपा

❖ "बारह बरस लौ कूकर जीवै, अरू तेरह लौ जिए सियार।"
बरस अठारह क्षत्री जीवै. आगे जीवन को धिक्कार ।।

- जगनिक

❖ " राम कहा सिर एह सोहन्ति " - स्वयंभू

❖ " जिह दिसि दिसि तिमिरइँ मिलियाई। "
तिह दिसि दिसि जारइ मिलियाईं ।।

❖ 'ताँबा तूंबा ये दुइ सूचा, राजा ही ते जोगी ऊँचा।"
ताँबा डूबै तँबा तेरे, जीवै जोगी राजा मरै ।। - चरपटनाथ

❖ किसका बेटा किसकी बहू, आप सवारथ मिलिया सहू। - चरपटनाथ

भक्तिकाल

महत्त्वपूर्ण कथन

- भक्ति आन्दोलन भारतीय चिन्ताधारा का स्वाभाविक विकास है।
  - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- "लेकिन जोर देकर कहना चाहता हूँ कि अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी इस साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।" - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

❖ समूचे भारतीय इतिहास में अपने ढंग से अकेला साहित्य है। इसी का नाम भक्ति साहित्य है। यह एक नई दुनिया है। -

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

❖ भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थें। - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

❖ तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

❖ भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

❖ तुलसी का 'रामचरितमानस' लोक से शास्त्र का, संस्कृत से भाषा का, सगुण से निर्गुण का, ज्ञान से भक्ति का, शैव से वैष्णव का, ब्राह्मण से शूद्र का, पण्डित से मूर्ख का, गृहस्थ से वैराग्य का समन्वय है। - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

❖ बिजली की चमक के समान अचानक समस्त पुराने धार्मिक मतों के अन्धकार के ऊपर एक नयी बात दिखाई दी। कोई हिन्दू यह नहीं जानता कि यह बात कहाँ से आई और कोई भी इसके प्रादुर्भाव का कारण निश्चित नहीं कर सकता। - डॉ. ग्रियर्सन

- ❖ हम अपने को ऐसे धार्मिक आन्दोलन के सामने पाते हैं, जो सब आन्दोलनों से कहीं अधिक है, जिसे भारतवर्ष ने कभी देखा है, यहाँ तक कि वह बौद्धधर्म के आन्दोलन से भी अधिक विशाल है, क्योंकि इसका प्रभाव आज भी विद्यमान है। इस युग में धर्म ज्ञान का नहीं बल्कि भावावेश का विषय हो गया था। - डॉ. ग्रियर्सन
- ❖ भक्ति आन्दोलन ईसाइयत की देन है। - डॉ. ग्रियर्सन
- ❖ भक्ति धर्म का रसात्मक रूप है। - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

❖ भक्ति का जो सोता दक्षिण की ओर से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर पहले से ही आ रहा था, उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ती हुए जनता के हृदय में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला। - रामचन्द्र शुक्ल

❖ प्रतिभा उनमें (कबीर में) बड़ी प्रखर थी - रामचन्द्र शुक्ल

❖ कबीर तथा अन्य निर्गुण पन्थी सन्तों के द्वारा रागत्मिका 'भक्ति' और ज्ञान का योग तो हुआ है पर कर्म की दिशा वही रही जो नाथ पन्थियों के यहाँ रहीं। - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

- कबीर ने अपनी झाड़-फटकार के द्वारा हिन्दुओं और मुसलमानों का कट्टरपन दूर करने का जो प्रयास किया, वह अधिकतर चिढ़ाने वाला सिद्ध हुआ। हृदय का स्पर्श करने वाला नहीं। - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

- हिन्दी काव्य की सब प्रकार की रचना शैली के ऊपर स्वामी तुलसीदास ने अपना ऊँचा स्थान प्रतिष्ठित किया है। यह उच्चता और किसी को प्राप्त नहीं। - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

❖ जिस प्रकार रामचरित गान करने वाले भक्त कवियों में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान सर्वश्रेष्ठ है, उसी प्रकार कृष्ण चरित गाने वाले भक्त कवियों में महामा सूरदास का। वास्तव में ये हिन्दी काव्य- गगन के सूर्य और चन्द्र हैं। - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

❖ भाषा बहुत परिष्कृत और परिमार्जित न होने पर भी कबीर की उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें बड़ी प्रखर थी, इसमें सन्देह नहीं हैं। - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

❖ कबीर ने केवल भिन्न प्रतीत होती हुई परोक्ष सत्ता की एकता का आभास दिया था। प्रत्यक्ष जीवन की एकता का दृश्य सामने रखने की आवश्यकता बनी थी। यह जायसी द्वारा पूरी हुई। - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

❖ पराजय के बाद व्यक्ति या तो अपनी आध्यात्मिक श्रेष्ठता दिखाना चाहता है अथवा विलास में डूबकर पराजय को भूल जाना चाहता है। भक्ति आन्दोलन का स्रोत पहली मनोवृति हैं। - बाबू गुलाबराय

❖ जिस युग में कबीर, जायसी, तुलसी, सूर, जैसे सुप्रसिद्ध कवियों और महात्माओं की दिव्यवाणी उनके अन्त: करणों से निकलकर देश के कोने-कोने में फैली थी, उसे साहित्य के इतिहास में सामान्यत: भक्तियुग कहते हैं। निश्चित ही वह हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग था। -

डॉ. श्यामसुन्दर दास

तुलसीदास

'दोहावली' से

❖ हिय निर्गुन नयनन्हि सगुन, रसना राम सुनाम।
मनहुँ परट - सम्पुट लसत, तुलसी ललित ललाम।।

❖ एक भरोसे एक बल एक आस विस्वास।
एक राम घन श्याम हित चातक तुलसीदास ।।

❖ साखी सबदी दोहरा, कहि किहनी उपखान।
भगति निरूपहि भगत कलि निन्दहि बेद पुरान ।।

❖ का भाखा का संस्कृत प्रेम चाहिए साँचु।
का जुआवै कामारी का लै केरे कमाचु॥

'कवितावली' से

❖ गोरख जगायो जोगु, भगति भगायो लोगु।

❖ धूत कहौ अवधूत कहौ, कहौ, रजपूत कहौ जुलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सौं बेटा न ब्याहब काहू की जाति बिगार न सोऊ।

❖ खेती न किसान को भिखारी को न भीख भली।

- माँगी के खइबो मसीत के सोइबो, लेबे को एक न दैबे को दोऊ।
- आगि बडवागि ते बड़ी है आगि पेट की।
- अवधेस के द्वारे सकारें गई सुता गोद कै भूपति लैनिक से।
- पुरतें निकसी रघुवीर बधु धरि धीर दए मग में डग है ।।
- आश्रम - बरन कलि बिबस बिकल भए।
  निज - निज मरजाद मोंटरी - सी डार दी ॥

'विनय पत्रिका' से

- अबलौं नसानी, अब न नसैहौं।
  राम कृपा भव निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं।।
- ऐसो को उदार जग माहीं।
  बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं।।
- कबहुँक अम्ब, अवसर पाइ।
  मेरिऔ सुधि धाबी कछु करुन कथा चलाइ।।

❖ केसव ! कहि न जाइ का कहिये ।

सून्य भीति पर चित्र रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे ॥

❖ जाके प्रिय न राम बैदेही ।

तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ॥

❖ माधव! मो समानं जग माहीं ।

सब विधि हीन, मलीन, दीन अति, लीन - विषय कोउ नाहीं ।

❖ सुनि सीतापति - सील सुभाउ ।

❖ श्री राम चन्द्र कृपालु भजु मन हरण भय भव दारुणां ।

'रामचरितमानस' से

- ❖ वर्णानामार्थ संघानां रसाना छन्द समित मंगलरानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ।
- ❖ सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।
- ❖ बन्दउगुरु पद पदमु परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
- ❖ निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका।
- ❖ कबित बिबेक एक नहिं मोरे। सत्य कहउँ लिखी कागद कोरे।
- ❖ कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सब सम कहँ हित होई।

- अगुन सगुन दुई ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा ।
- जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू । सो तिन्ह मिलई न कछु संदेहू
- बड़े भाग मानुस तन पावा, सुर दुर्लभ सदग्रथहिं गावा ।

जायसी

- औ मन जानि कवित्त अस कीन्हा ।

  मकु यह रहै जगत महं चीन्हा।।

सूरदास

- भरोसे दृढ़ इन चरनन केरो।
- अवगति गति कछु कहत न आवे।
- मो सम कौन कुटिल खल कामी।
- तलफल रहति मीन चातक ज्यों।
  जल बिनु तृषानु छीजै ।।
- अँखियाँ हरि दरसन की भूखीं।
- तजो मन हरि विमुखन को संग।

❖ मानों भाई घन-घन अन्तरदामिनी

❖ धन दामिनी, दामिनी घन अन्तर सोभित हरि ब्रजभामिनि।

❖ नन्द जू मेरे आनन्द भयो, हौ गोवर्धन ते आयो।

❖ है हरि भजन को परमान। नीच पावै ऊँच पढ़वी, वाजते नीसान ।।

❖ निर्गुन कौन देस को बासी ?

मधुकर हँसि समुझाय सौह दे बुझति सांच, न हांसी।

❖ ऊधौ ! तुम अपनो जतन करौ।

❖ मधुबन तुम कत रहत हरे।

- लरिकाई कौ प्रेम कहौ अलि कैसे करि के छूटत।।
- शोभित कर नवनीत लिए
  घुटुरून चलन रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।
- पाहुनि करि दै तनक महयौ ।
  आरि करै मनमोहन मेरो, अंचल आनि गयौ ।।
- हरि है राजनीति पढि आए।
  समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए ?
- मो सम कौन कुटिल खल कामी ।

- मधुकर ! तुम रस लम्पट लोग।
- आँखियाँ हरि दरसन की प्यासी
- हक भक्तन के भक्त हमारे।
  सुन अर्जुन परतिज्ञा मेरी यह व्रत टरत न टारे।।
- चरण कमल बन्दौ हरि राई।

मीराबाई

- घायल की गति घायल जाने और न जाने कोई।
- अँसुवन जल सीचि, सींचि प्रेम बेलि बोई।
- सावन में उमग्यो हियरा, भजन सुण्या हरि आवण री।
- बसो मेरे नैनन में नन्दलाल ।
- जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोइ ।
- मन रे परसि हरि के चरना।

  सुभग सीतल कमल कोमल त्रिविध ज्वाला हरन ।

❖ जोगी, मत जा, मत जाइ पाइ परूँ चेरी तेरी हो।

प्रेम - भगाति को पैंड़ा ही न्यारो हमको गैल बता जा।

❖ पग बाध धुँधुरया नाचा रे।

रहीम

- सुरतिय नरतिय नागतिय, सब चाहत उस होय।
- गोद लिए हुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय।।

- रहिमन विपदा हूँ भली, जो थोड़े दिन होय।
- हित अनहित या जगत में, जान पड़त सब कोय।।

गुरुनानक

(1) इस दम दा मैंनूँ कीबे भरोसा, आया न आया न आया।
यह संसार रैन दा सुपना, कही देखा, कही नाहिं दिखाया।

(2) जो नर दुख में दुख नहि मानै
सुख सनेह भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ॥

(3) आवै जाणै आपे देई आखहि सिभि केई कई
जिसनौ बखसे सिफति सालाह, नानक पाति साही पातिसाहुँ।।

(4) सुरखान खमसान कीआ हिन्दुस्तान डराइया।
आपै दोस न देई करता जपु करि मुगल चढ़ाइया।
एकती मार पई कुर लागै तै की दरदु न आइया।

(5) जिन सिर सोहन पटीआ मांगी पाइ संधूर।
ते सिर काती मुनी अहि गल विधि आपै धूड़।।

दादू दयाल

(1) भाई रे ! ऐसा पन्थ हमारा।
है पख रहित पंथ गह पूरा अबरन एक अधारा।

(2) धीव दूध से रमि रह्या व्यापक सब ही ठौर।

(3) यह मसीत यह देहरा सत गुरु दिया दिखाइ।
भीतर सेवा बन्दगी बाहिर काहे जाइ।

(4) असत मिलइ अन्तर पडइ, भाव भगति रस जाइ।
साथ मिलइ सुख ऊपजई, आनन्द अंग नवाइ ।।

(5) अपना मस्तक काटिकै वीर हुआ कबीर।

सन्त नामदेव

(1) मन मेरी सुई, तन तेरा धागा। खेचरजी के चरण पर नामा सिंपी लागा।।

रैदास (सन्त रविदास)

(1) जाके कुटुम्ब सब ढोर ढोवंत । फिरहि अजहुँ बनारसी आसपास । आचार सहित विप्र करहि डंडउति । तिन तिनै रविदास दासानुदास।।

(2) ऐसी मेरी जाति विख्यात चमार |

(3) पावर जंगम कीट पतंगा पूरि रह्यो हरिराई ।

(4) गुन निर्गुन कहियत नहि जाके ।

(5) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग अंग वास समानी।

(6) जाति ओछा पाती ओछा, ओछा जनमु हमारा ।

(7) दूध त बछरै थनह विडारेउ। फुलू भँवर, जलु मीन विगारेउ॥

माई, गोबिन्द पूजा कहा लै चढ़ावउँ। अवरु त फूल अनुपू न पावऊँ॥

मलयागिरिवै रहै है भुअंगा। विषु अमृत बसहीं इक संगा॥

तन मन अरपउँ पूज चढ़ावउँ। पुरु परसादि निरंजन पावउँ।

(8) अखिल खिलै नहिं, का कह पण्डित, कोई न कहै समुझाई।

अबरन बरन रूप नहिं जाके कहँ लौ लाइ समाई॥

चन्द सूर नहि, राति दिवस नहि, धरनि अकास न भाई।

करम अकरम नहिं सुभ असुभ नहिं का कहिं देहुँ बडाई॥

(9) जब हम होते तब तू नाहीं, अब तू ही, मैं नाहीं।
अतल अगम जै लहरि मइ उदधि, जल केवल जलमाहीं॥

(10) माधव क्या कहिए प्रभु ऐसा, जैसा मानिए होइ न तैसा।
नरपति एक सिंहासन सोइया, सपने भया भिखारी॥
अछत राज बिछुरत दुखु पाइया, सो गति भई हमारी।

(11) मन चंगा तो कठौती में गंगा।

रज्जब (रज्जब अली खाँ)

(1) धुनि ग्रभे उत्पन्नो, दादू योगेन्द्रा महामुनि

मलूक दास

❖ (1) अब तो अजपा जपु मनमेंरें ।

सुर न असुर टहलुआ जाकि मुनि गन्ध्रव हैं जाके चेरे।

❖ (2) नाम हमारा खाक है, हम खाकी बन्दे |

खाकहि से पैदा किए अति गाफिल गंढ़े।

❖ (3) अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।